Chapter-8

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

अष्ठम अध्याय

उपसंहार

अष्टम अध्याय

उपसंहार

महादेवी छायावादी युग के चार आधार स्तम्भों में से एक हैं। हिन्दी साहित्य में महादेवीजी का विशेष योगदान रहा है।

हिन्दी साहित्य में पद्य एवं गद्य द्वारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में वे एक सशक्त एवं लोकप्रिय लेखिका हैं।

महादेवी जी ने समाज के प्रति आदर्शात्मक एवं उपदेशात्मक दृष्टिकोण न अपना कर वर्तमान समय की समस्या पर यथार्थवादी ढंग से प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है।

महादेवी वर्मा समाज में पनप रहे असामाजिक तत्वों से जीवन पर्यन्त संघर्ष करती रही। उनके इस संघर्ष के पीछे उनकी संवेदना है साथ ही जन–मानस की कराह एवं शोषित, पिछड़े लोगों की करूण पुकार भी थी। नारी पर होने वाले पाशविक अत्याचारों को महादेवी जी के अंतस् को झकझोर देता है।

प्रबंध का विभाजन आठ अध्यायों में किया गया है प्रथम अध्याय के अंतर्गत महादेवी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सामान्य परिचय के पश्चात् जो तथ्य सामने आये वे इस प्रकार हैं –

महादेवी जी का जन्म अत्यन्त समृद्ध एवं संस्कारशील परिवार में हुआ। परिवार में सभी साहित्यानुरागी थे। महादेवी के व्यक्तित्व के सृजन में उनके माता, पिता एवं नाना का योगदान रहा है। वहीं दूसरी ओर युवावस्था में महान विभूतियों भगवान बुद्ध, महात्मा गाँधी तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर के आदर्शो को लक्ष्य बनाकर ही वे आगे बढ़ती दृष्टिगोचर होती हैं। विभिन्न भाषाओं का ज्ञान संस्कृत दर्शन, चित्र–कला संगीत कला आदि के

अध्ययन के द्वारा साहित्य साधना में सफलता पाई है। महादेवीजी का गद्य हमें समाज में झाँकने की प्रेरणा देता है। महादेवी जी ने समाज को प्रत्यक्ष अंकित किया है महादेवी जी की रचनाओं संस्मरणों, रेखाचित्रों एवं निबंधों में उन्होंने समाज के प्रति अपनी कर्तव्य निष्ठा को व्यक्त किया है। महादेवी के साहित्य में अधिकांशतः शोषित, पीड़ित, दरिद्र एवं पिछड़े हुए लोगों की परिस्थितियों एवं समस्याओं का चित्रण है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में मुख्यतः महादेवी जी के व्यक्तित्व, छायावाद में उनका स्थान एवं साहित्य पर विहंगावलोकन किया गया है।

महादेवी जी ने अपना मार्ग स्वयं चुना था। अतः उनसे जुड़ी कठिनाइयों, परिस्थितियों को सामान्य जन के बीच रहकर जीया।

महादेवी जी का गद्य पद्य दोनों पर समान अधिकार हैं। इसी वजह से इन्हें दुरुह भावों की संवाहिका कहा जाता है। कोई इन्हें आधुनिक मीरा कहता है तो कोई उनके काव्य-संसार को विरही मन का विलाप कहता है।

महादेवी की काव्य भाषा के सम्बन्ध में प्रकाशचन्द्र गुप्त का एक उदाहरण है –

श्रीमती महादेवी वर्मा के गीतों का एक बड़ा आकर्षण उनकी किन्ही अनमोल सांचों में गढ़ी भाषा है। भाषा की दृष्टि से आप हिन्दी के किसी भी कवि से पीछे नहीं हैं। पन्त की भाषा किलिष्ट और संस्कृत भार से आक्रान्त है। निराला के शब्दों में अबाध वेग अवश्य है किन्तु उनकी भाषा में वह पच्चीकारी नहीं। अन्य कवियों में इस प्रकार चुन-चुनकर मोतियों की जड़ाई नहीं मिलती। भगवती चरण वर्मा और बच्चन सर्वसाधारण के अधिक निकट हैं। किन्तु इस मधुर निर्झरिणी का मन्दिर कलकल निनाद अद्वितीय है। यह शब्दों की शिल्पकला आपकी अपनी विशेषता है। वह भाषा अलंकार भार से झुकी अवश्य है किन्तु बड़े चतुर कारीगर के गढे ये अलंकार हैं। एक-एक शब्द चुन-चुनकर इस शिल्पी ने संजोया है।[1]

महादेवी के समस्त गद्य कृतियों के सामान्य परिचय के पश्चात् विविध गद्य रूप मिलते हैं। इन रचनाओं में कहीं वे संस्मरणकार, कहीं रेखाचित्रकार, कहीं निबन्धकार और कहीं आलोचक के रूप में मिलती हैं।

महादेवी जी के गद्य-साहित्य का अध्ययन करने के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि महादेवी जी मूलतः एक मानवतावादी सामाजिक रचनाकार हैं। जिस प्रकार प्रेमचन्द ने अपनी मानवतावादी दृष्टि के द्वारा समाज एवं ग्राम्य जीवन का चित्रण किया है। महादेवी जी ने स्वातंत्रता पूर्व समाज का चित्रण कर ग्राम्य जीवन तथा शहरीजीवन की दुःख दैन्यता का वर्णन किया है तो साथ ही अपनी चेतना युक्त लेखनी से जन-मानस के प्राणों में भी नवीन चेतना का संचार किया है। साहित्यिक और विवेचनात्मक

ग्रन्थों के अन्तर्गत लेखिका की पांडित्यपूर्ण आलोचनात्मक दृष्टि का परिचय मिलता है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में महादेवी जी का योगदान अद्वितीय है।

शोध प्रबंध के द्वितीय अध्याय में हिन्दी गद्य के आरम्भ और विकास का जायजा लेना आवश्यक है। संस्मरण, रेखाचित्र एवं निबंध भूतकाल के बोधी जरूर है, लेकिन वर्तमान काल की स्थिति भी दर्शाई गयी है। भविष्यकालीन संकेत भी व्यक्त हुआ है। साहित्य की परिभाषा, स्वरूप एवं अंग के अन्तर्गत हिन्दी गद्य-उपन्यास, कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी आत्मकथा, पत्र, रिपोर्ताज, यात्रा गद्य काव्य, निबन्ध और समालोचना आदि की परंपरा जानने के लिए विकास यात्रा का क्रम समझना अत्यंत आवश्यक है। जिससे अगले अध्याय को समझने में भी आसानी होगी।

शोध प्रबंध के तृतीय अध्याय में महादेवीजी की गद्य विधाओं पर विचार किया गया है। महादेवी जी के संस्मरण, रेखाचित्र, निबंध आदि पर तात्विक विवेचन करने के उपरान्त यह दृष्टव्य है कि इनमें अत्यन्त दरिद्र, उपेक्षित, अछूत और कठोर परिश्रम से किसी तरह जीविका के नाम पर एक सूखी रोटी अर्जित कर पाने वालों से लेकर वंचिता, विधवा या परित्यक्ता स्त्रियाँ तो हैं ही साथ ही पुरुष की क्रूरता के शिकार पशु-पक्षी तक सम्मिलित हैं, जिसके माध्यम से उनके विद्रोह को वाणी मिली है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि इन संस्मरणों के पात्र कल्पनाप्रसूत नहीं है। यही कारण है कि ये संस्मरण सहानुभूति से आर्द्र, सामाजिक विकृतियों के प्रति आक्रोशमय एवं शोषितवर्ग विशेषतः नारी के प्रति ममता से ओत-प्रोत हैं। उनमें मानवतावादी जीवन-दृष्टि है। इसी से ये संस्मरण जितने छायावादी लेखक की निधि हैं उतने ही प्रगतिशील कलाकार की सम्पत्ति हैं।[2]

महादेवी के संस्मरण हिन्दी साहित्य के लिए एक नई पहचान हैं।

महादेवी के रेखाचित्र उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा की पहचान कायम करते हैं। इन रेखाचित्रों में चित्रविधान एवं यथार्थ जगत का अंकन किया गया है। तो दूसरी ओर महादेवी के रेखाचित्रों में अपरिचितों को आत्मीय बना देने की क्षमता तो है ही साहित्य जगत के प्रसिद्ध व्यक्तित्व सम्पन्न चेहरों को हमारे निकट इतना मूर्त कर देने की अद्भुत जादूगरी भी है, कि अपरिचित व्यक्तियों को भी मानों हम एक नए स्तर पर पहुँचाते हैं। इनके रेखाचित्रों के पीछे लेखिका की सूक्ष्म संवेदना और उस संवेदनशीलता के अनुरूप चित्रमयी भाषा की अभिव्यंजना शक्ति सक्रिय रहती है।

महादेवी के रेखाचित्रों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि जहाँ अन्य रेखाचित्रकारों को शब्दों और बिम्बों की खोज में उन्हें अन्यत्र जाना पड़ा है, वहाँ महादेवी

को इन उपादानों के लिए अपने घर की सीमा के बाहर बहुत कम जाना पड़ा है। इनके रेखाचित्रों में मानव–हृदय की अतल गहराइयों में सीधे उतरने की गहन क्षमता है। उनका प्रत्येक रेखाचित्र हमारी आँखों के समक्ष चित्रपट का रूप धारण करके एक बार घूम जाता है तथा उनकी अनुभूति हमारी भी अनुभूति बन जाती है।[3] यही कारण है कि महादेवी जी के रेखाचित्रों ने साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

महादेवी के निबन्धों का विश्लेषण करने के पश्चात् यह पता लगता है कि वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति में अत्यधिक स्पष्ट हैं। इन निबन्धों में प्रमुख रूप से कुछ ठोस विचार हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं। महादेवी जीवन के हर क्षेत्र में सामंजस्य को ही अधिक महत्व देती हैं और उसी को स्वीकार करती हैं। व्यक्ति के बर्हिजगत एवं अन्तर्जगत में समन्वय उसके जीवन की सुख–दुखात्मक अनुभूतियों में समन्वय, काव्य अथवा जीवन के यथार्थ और आदर्श में समन्वय, कला के क्षेत्र में ललित कला और उपयोगी कला में समन्वय तथा बुद्धि एवं हृदय का समन्वय चाहती है।

इस प्रकार हिन्दी निबन्धकारों में महादेवी का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके निबन्ध साहित्य की अमूल निधि है। सम्बन्ध में डॉ. प्रभाकर माचवे ने लिखा है – "महादेवी के निबन्धों की विशेषता है। वे रेखाचित्र और संस्मरण की सीमारेखा वाले निबन्ध ही लिखती हैं फिर भी उनके कई संस्मरणात्मक चित्र जैसे महाप्राण निराला की भूमिका और उनके कई भाषणात्मक निबन्ध बहुत सुन्दर बन पड़े हैं। भक्तिन, चीनी फेरीवाला और ऐसी ही चित्रों से भरे उनके निबन्धों की तुलना एक स्नेपशॉटों के एलबम से की जा सकती है।"

महादेवी के निबन्ध यद्यपि साहित्य और समाज की विविध समस्याओं को लक्ष्य करके लिखे गए हैं, तथापि विषय वस्तु की दृष्टि से उनमें एक निष्ठता है। अपने विवेचनात्मक निबन्धों तथा विभिन्न काव्य संग्रहों की भूमिकाओं में विशुद्ध शास्त्रीय, बौद्धिक और तार्किक विवेचन है। रहस्यवाद शीर्षक निबन्ध में उन्होंने सैद्धान्तिक निष्कर्ष प्रस्तुत किया है। यथार्थवाद और आदर्शवाद में इसी प्रकार प्रवृत्ति पदक अध्ययन, सैद्धान्तिक मीमांसा और काव्य समीक्षा के तत्व विद्यमान हैं। निष्कर्षों के कारण श्रेष्ठ है।[4]

इस अध्याय विश्लेषण के पश्चात चतुर्थ अध्याय के निष्कर्ष में सहाय लगे विषयों को लिया गया है। जिसमें समाज, सामाजिक चेतना स्वरूप और दृष्टि पर चिंतन किया गया है। उद्‌भव से लेकर वर्तमान समय तक का स्वरूप निरंतर बदलता रहा है।

प्राचीन समय से लेकर किस रूप में शुरू हुई यात्रा आज विश्व में विचरण कर पथ पर अग्रसरित है। जो सामाजिक चेतना के रूप में दृष्टिगोचर हो रही है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के पंचम अध्याय में महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में सामाजिक

चेतना का अध्ययन किया है। जो शोध का मुख्य विषय है।

महादेवी रूढ़ियों, अन्धविश्वासों एवं कुसंस्कारों में जकड़े हुए समाज में रह रहे जनमानस की नस-नस को पहचानती थी। यही कारण है कि उनके गद्य-साहित्य में भारतीय समाज की रूप रेखा उभर कर आई है। ऐसा कोई भी अंश महादेवी जी की लेखनी से अछूता नहीं है, जो मनुष्य के विकास में बाधक हो। महादेवी जी का गद्य साहित्य सामाजिक चेतना को लेकर ही लिखा गया है। सामाजिक जीवन से प्रभावित व्यक्ति का संघर्ष और उसका स्वाभिमान उभरकर पाठक के सामने आ गया है। साथ ही नारी के विविध रूपों का बड़ा ही मर्मस्पर्शी एवं हृदयग्राही चित्रण महादेवी जी ने किया है। परिवार एवं समाज में नारी के अनेकों सम्बन्ध जुड़े हुए हैं। यह नकारा नहीं जा सकता कि नारी ही परिवार एवं समाज की मूल है एवं उसके अनेकों रूपों की सार्थकता भी है। साथ ही झूठी सामाजिक एवं नैतिक मान्यताओं के कारण किस प्रकार नारी का शोषण दोहन होता रहा है। दुर्भाग्य यह है कि नारी सिर्फ पुरुषों द्वारा ही नहीं छली गई है वरन नारी को नारी के अत्याचारों का भी शिकार होना पड़ा है। आज के आधुनिक युग में महिलाएँ घर की दहलीज को लाँघकर एक सूत्रता का उद्घोष कर रही हैं। समाज का प्रत्येक वर्ग एक दूसरे पर निर्भर है। समाज में संतुलित व्यवस्था बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि किसी वर्ग को विशेष महत्व देना समाज की व्यवस्था को असंतुलित करना है एतदर्थ हमें हर वर्ग के प्रति समभाव मनोवृति रखनी चाहिए। अब यह कहना उचित ही होगा कि सामाजिक चेतना मनुष्य के अन्दर आना समाज का सच्चा प्रतिबिम्ब है।

युगों से नारी की समस्याएँ चली आ रही है। महादेवी जी ने नारी सम्बन्धी समस्याओं की विभिन्न स्थितियों को नारी पात्रों के माध्यम से स्पष्ट किया है। नारी सम्बन्धी पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सभी समस्याओं का युगीन परिवेश में चित्रण किया है। महादेवी जी चेतनाशील युक्त नारी हैं। समाज संस्कृति को हानि न पहुँचाते हुए नवीनता को ग्रहण कर अनुपयोगी पुरातन को त्यागा है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के षष्ठ अध्याय में महादेवी जी की संवेदनाएं व्यक्त हुई हैं एवं उन संवेदनाओं में युग बोध पर भी विचार किया है। महादेवी जी की वैयक्तिक संवेदना व्यक्तिगत विचारधारा की द्योतक न होकर जन-मानव की अनुभूतियाँ हैं। हाँ, ये अवश्य है कि महादेवी जी के अन्तर्गमन के सुख दुःख, हास्य रुदन, हर्ष-शोक, आनन्द पीड़ा गहरी है। और कीट-पतंग, पशु-पक्षी, मनुष्यों तक की करुणा संवेदना महादेवी के हृदयमें कराह उठी है।

महादेवी जी ने वर्तमान सामाजिक व्यवस्था और परम्परागत संस्कारों पर भी व्यंग्य

किया है। तो साथ ही मानव जीवन की गतिशील प्रवृत्तियों में खत्म हो रही वेदना, संवेदना का भी चित्रण किया है। मानवीय – जीवन के वैषम्य और शोषण को आँका है। मानव जीवन में पग-पग पर दुःख, पीड़ा के अतिरिक्त कुछ नहीं रह गया अपने अहं एवं स्वार्थ के कारण उसने अपने जीवन को और भी दुभर बना लिया है।

महादेवी के 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' में उनके सूक्ष्म अन्तर्भाव से उत्पन्न ठोस बिन्दु हैं जो मर्म पर चोट करते हुए अमिट रूप से अंकित है। मानो महादेवी जी की अन्तर्भाव की संवेदना संचित होकर शब्दों पात्रों में सजीव हो उठती है। 'पथ के साथी' में महादेवी जी ने समकालीन कवियों का व्यक्तित्व कैसा था उसपर विचार करते हुए उनकी मनोभूमिओं को स्पष्ट किया है। तो साथ ही उनके और अपने बीच के आत्मीय सम्बन्धों का संवेदनयुक्त चित्रणकर उल्लेख किया है। साहित्यकार अपनी मूल संवेदना को विविध पहलुओं में जीकर ही रचना का रूप देता है। समय बीतने के साथ-साथ समाज में भी परिवर्तन होता है। विज्ञान के विकास के साथ-साथ नए-नए तकनीकी साधनों का आविष्कार हुआ। तो साथ व्यक्ति सुविधाओं से सम्पन्न होने की होड़ लगाने लगा। आधुनिक रहन-सहन के साथ वह अपने समाज, अपने लोगों को भूलता चला जा रहा है इसी कारण आज मनुष्य में संवेदनाएँ लुप्त होती जा रही हैं। आज मनुष्य की व्यैक्तिक संवेदनाओं की लुप्तता एक अहम प्रश्न बन गया?

सप्तम अध्याय में साहित्यकार संसद भवन की एक मुलाकात एवं महादेवी के संदर्भ में साहित्यकार का साक्षात्कार है। महादेवी जी के बारे में अधिक जानने की जिज्ञासा मुझे उनकी कर्मभूमि इलाहाबाद ले गई। श्रेष्ठ कवि श्री प्रद्युम्ननाथ तिवारी 'करुणेश' जी का साक्षात्कार, महादेवी जी के जीवन, उनके साहित्य एवं उनके व्यक्तित्व के संदर्भ में, लिया। श्री करुणेश जी से महादेवी जी के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त कर मुझे यह अनुभव हुआ कि महादेवी जी आज भी हमारे बीच उपस्थित हैं। साहित्य के प्रति उनकी कर्तव्यनिष्ठा एवं समर्पण उनके द्वारा इलाहाबाद में स्थापित "साहित्यकार संसद भवन" की मुलाकात से स्पष्ट हुई।

सभी दृष्टियों से विचार करके निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि महीयसी महादेवी वर्मा का साहित्यिक जीवन परम श्रद्धेय एवं वन्दनीय रहा है। उनके गद्य साहित्य में सामाजिक चेतना का आत्मसात निश्चित रूप से युग का अतिक्रमण करते दिखाई देता है। अतः आने वाली पीढ़ियों के लिए महादेवी जी का गद्य साहित्य प्रेरणा एवं चेतना युक्त रहेगा।

संदर्भ सूची

1. साहित्यकार महादेवी, डॉ. श्रीमती हर्षनन्दिनी भाटिया, श्रीमती विभाजैन कन्दर्प प्रकाशन पृष्ठ 55
2. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर पृष्ठ 50
3. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर पृष्ठ 64
4. महादेवी का गद्य साहित्य : विश्लेषण और स्वरूप, डॉ. गोवर्द्धन सिंह, अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर पृष्ठ 81